THRU the BIBLE



परमेश्वर की बुलाहट के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया

उत्पत्ति 35 - 36

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया

प्रार्थना के साथ शुरुआत करें
पढ़ें: उत्पत्ति 35 - 36
सुनें: THRU the BIBLE: उत्पत्ति 35:1-29, उत्पत्ति 36:1-43

प्रिय परमेश्वर,

तेरे वचन पर ठहरकर मनन करने के इस अवसर के लिए तेरा धन्यवाद। हमें तेरी योजना के बड़े चित्र को देखने में सहायता कर। हमारी समझ को गहरा कर, हमारे विश्वास को दृढ़ कर, और हमें बुद्धि तथा उद्देश्य के साथ आगे चलने की अगुवाई कर।

आमीन।



याकूब के परिवार के साथ हुए दुखद अनुभवों के बाद, **परमेश्वर ने याकूब से बेतेल वापस जाने को कहा।** उस जगह का नाम सुनते ही याकूब को कई अहम बातें याद आ गई होंगी। जवानी के दिनों में, जब वह एसाव से बचने के लिए अपनी माँ का घर छोड़कर भागा था, तो **उसने अपनी पहली रात बेतेल में ही बिताई थी।** एक पत्थर को तकिया बनाकर सोते हुए, **याकूब ने धरती से स्वर्ग तक जाती एक सीढ़ी का सपना देखा था** और उसने उस पर स्वर्गदूतों को ऊपर-नीचे आते-जाते देखा था।

याकूब अपने घर में आत्मिक अगुवाई की शुरुआत करता है

अब परमेश्वर ने याकूब को वापस बेतेल बुलाया, और तब उसने अंततः **अपने घर में आत्मिक अगुवाई करना शुरू किया।**



परमेश्वर ने याकूब को तीन निर्देश दिए:

सबसे पहले, उन्हें "तुम्हारे बीच में जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल डालो;"(उत्पत्ति 35:2) उनके पास मूर्तियाँ क्यों थीं? जब याकूब, राहेल और लिया लाबान से भाग रहे थे, तो राहेल परिवार की मूर्तियाँ साथ ले गई थी।

यह मान लेना आसान होगा कि याकूब ने उन्हें हटा दिया होगा क्योंकि वह जीवित और सच्चे परमेश्वर को जानता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था, और अब हम देखते हैं कि **उसका पूरा परिवार इन पराए देवताओं की उपासना कर रहा था।** अब याकूब ने कहा कि उन्हें इनसे छुटकारा पाना होगा।

दूसरा, परमेश्वर कहता है, **"शुद्ध हो जाओ।"** विश्वासी के लिए इसका अर्थ है **अपने जीवन के पाप का सामना करना** (देखें 1 यूहन्ना 1:9)। **परमेश्वर क्षमा करेगा, लेकिन हमें पाप स्वीकार करना होगा।**

तीसरा, **"अपने वस्त्र बदलो।"** दूसरे शब्दों में, पुराने वस्त्र उतार दो। पवित्रशास्त्र में **वस्त्र अक्सर जीवन की आदतों का प्रतीक हैं।** जैसे एक फुटबॉल खिलाड़ी अपनी वर्दी पहनता है, वही उसकी पहचान और जीवन-शैली को दर्शाती है।

याकूब ने परमेश्वर के लिए जीना शुरू किया

जिस दिन याकूब बेतेल वापस गया, उसने परमेश्वर के लिए जीना शुरू कर दिया। जब याकूब ने बेतेल के बारे में सोचा, तो उसे याद आया कि **जब वह मुश्किल में था, तब परमेश्वर उससे कैसे मिला था।** वह घर से भाग रहा था, उसे घर की याद आ रही थी और वह अकेला था; वह बेतेल पहुँचा**, जहाँ परमेश्वर ने उससे अपनी विश्वासयोग्यता का वादा किया था।** अब, कई सालों बाद, याकूब ने देखा कि परमेश्वर ने सचमुच उसका साथ निभाया था। **अब परमेश्वर ने उससे कहा, "वहाँ वापस जा जहाँ से तुने शुरुआत की थी। फिर से शुरू कर।"**

जब वे बेतेल (जिसका नाम पहले लूज़ था) लौट रहे थे, **तो परमेश्वर ने याकूब और उसके परिवार की रक्षा की,** इसलिए किसी ने उनका पीछा नहीं किया। **उसने वहाँ एक वेदी बनाई और उस जगह का नाम एल-बेतेल रखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर के घर का परमेश्वर।" यह याकूब के जीवन में आत्मिक विकास को दर्शाता है।**

परमेश्वर अपना वादा फिर से दोहराता है

उस जगह पर, जहाँ दशकों पहले परमेश्वर याकूब से मिले थे, वे फिर से उसके सामने प्रकट हुए। इतने सालों तक परमेश्वर याकूब के साथ काम करते रहे, लेकिन कई मायनों में लाबान के साथ बिताए गए वे साल बेकार ही गए।

"और परमेश्वर ने उससे कहा, "अब तक तो तेरा नाम याकूब रहा है; पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा।" इस प्रकार उसने उसका नाम इस्राएल रखा। फिर परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ। तू फूले-फले और बढ़े; और तुझ से एक जाति वरन् जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।" उत्पत्ति 35:10-11

"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ" — यह वही नाम है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने अब्राहम के सामने अपनी पहचान बताने के लिए किया था।

"और जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता हूँ, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूँगा।" उत्पत्ति 35:12

यह **तीसरी बार है जब परमेश्वर ने इस महत्वपूर्ण ज़मीन का वादा** उसके परिवार से किया है - पहले अब्राहम से, फिर इसहाक से, और अब याकूब से। प्रभु को इन सभी लोगों को इसके बारे में कम से कम दो या तीन बार बताना पड़ा। **याकूब ने उस जगह पर पत्थर का एक खंभा बनाया** जहाँ परमेश्वर ने उससे बात की थी। उस खंभे पर उसने पेय चढ़ाया और उस जगह का नाम बेतेल रखा।

यह पेय बलि का पहला ज़िक्र है। लेव्यव्यवस्था की किताब में पाँच तरह की भेंटों के बारे में बताया गया है, लेकिन पेय की भेंट का ज़िक्र नहीं है। पेय की भेंट को बस दूसरी भेंटों पर डाला जाता था और वह भाप बनकर ऊपर उठ जाती थी। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा था **कि उसका जीवन भी इसी प्रकार पेय की भेंट के समान पूरी तरह उंडेल दिया जाए।** (फिलिप्पियों 2:17)।

बिन्यामीन का जन्म

अपनी प्रिय पत्नी राहेल से याकूब का एक पुत्र था, यूसुफ। अब जब वे बेतेल से यात्रा कर रहे थे, तब **राहेल को अपने दूसरे पुत्र के जन्म की पीड़ा शुरू हुई।** बच्चे के जन्म के समय **राहेल मृत्यु के निकट थी।** उसने उसका नाम बेनोनी रखा, जिसका अर्थ है "मेरे दुःख का पुत्र।" लेकिन याकूब ने उसकी ओर देखकर कहा, "मैं अपनी प्रिय राहेल को खो चुका हूँ, और यह छोटा बच्चा उसी जैसा दिखता है, इसलिए **मैं इसका नाम बिन्यामीन रखूँगा,"मेरे दाहिने हाथ का पुत्र।"**

यह सत्य था कि वह बालक राहेल के दुःख का पुत्र था, लेकिन याकूब उसे बेनोनी नहीं कह सका। वह उसके दुःख का कारण नहीं था; वह उसके दाहिने हाथ का पुत्र था-उसकी लाठी, उसका सहारा, **वह जिस पर वह अपने बुढ़ापे में भरोसा करेगा।** इससे हमें उस बड़े दुःख को समझने में सहायता मिलती है जिससे याकूब बाद में गुज़रेगा। **यह सब याकूब के पाप की जड़ से उत्पन्न हुआ।**

परमेश्वर हमारे जीवन के गलत कार्यों को स्वीकार नहीं करता। हम उनसे बच नहीं सकते।



उन कई मुश्किल सालों में **राहेल के प्रति याकूब का प्रेम शायद उसके जीवन की एकमात्र अच्छी बात थी।** वह पूरी तरह उसके प्रति समर्पित था और उसकी हर बात मान लेता था (जैसे अपने पिता की मूर्तियाँ अपने पास रखना)। राहेल ने याकूब को उसका पुत्र यूसुफ दिया था, और अब उसने बिन्यामीन को जन्म दिया। उसके जीवन का अर्थ राहेल की मृत्यु बन गया। याकूब के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था।

बाकी दस लड़कों से उसे कोई खुशी नहीं मिलती थी। **परमेश्वर उसे शायद हर दिन याद दिलाता था कि एक से ज़्यादा पत्नी रखना पाप है।** यह बात खास तौर पर तब साफ़ हो जाती है जब हम देखते हैं कि युसूफ के सौतेले भाइयों ने उसके साथ कैसा बर्ताव किया।

याकूब यूसुफ़ और बिन्यामीन से बहुत प्यार करता था, और बाकी बेटे उनसे जलते थे। उसे यूसुफ़ के साथ ऐसा भेदभाव नहीं करना चाहिए था, क्योंकि वह जानता था कि जब उसके पिता ने उसे नज़रअंदाज़ किया था, तो उसके अपने शुरुआती साल कितने तकलीफ़ भरे रहे थे। उसे पता था कि इससे कितनी परेशानी हुई थी।

इसहाक की मृत्यु

बुज़ुर्ग इसहाक, जो लंबी उम्र जी चुका था, चल बसा और उसके बेटों एसाव और याकूब ने उसे दफ़नाया। याकूब के उस देश में लौटने के बाद यह एकमात्र मौका था जब वे भाई फिर से एक साथ थे।

एसाव के खुद को जानने से पहले ही परमेश्वर उसे जानता था।

एसाव और उसका परिवार **एदोम राष्ट्र बना,** जो मृत सागर के दक्षिण-पूर्व में बसा। अगर हम उनके नामों की सूची बनाएँ, तो वे वही नाम होंगे जो आज अरब रेगिस्तान में प्रचलित हैं। यह एक पहाड़ी इलाका है। **यहाँ आज भी राजधानी शहर पेट्रा मौजूद है, जो चट्टानों को काटकर बनाया गया था। एदोम के बारे में** यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और ओबद्याह की भविष्यवाणियाँ बहुत ही सटीक रूप से पूरी हुई हैं।

एसाव एक आकर्षक नौजवान था, लेकिन **वह शारीरिक इच्छाओं में जीने वाला इंसान था।** हालाँकि, याकूब भी अपनी ज़िंदगी के ज़्यादातर समय ऐसा ही था। क्या एसाव के बजाय याकूब को चुनने में परमेश्वर से कोई गलती हुई थी? एसाव बाहर से बहुत अच्छा दिखता था। ओबद्याह की एक छोटी सी भविष्यवाणी हमें एसाव का असली रूप दिखाती है। अब तक, एक एसाव से लगभग 1,00,000 एदोमी बन चुके थे। उनमें से हर एक छोटा एसाव ही था। उस जाति को देखिए और आपको पता चल जाएगा कि एसाव से क्या निकला। हम क्या देखते हैं? **एक ऐसी जाति जो घमंड से भरी हुई है (ओबद्याह 1:3-4)। उनके दिल का घमंड आज़ादी का ऐलान था—एक ऐसी सोच जो कहती है कि वह परमेश्वर के बिना जी सकती है** और उसे परमेश्वर की कोई ज़रूरत नहीं है। यही था एसाव।

पुराने नियम की अंतिम पुस्तक में परमेश्वर कहता है, **"तौभी मैं ने याकूब से प्रेम रखा, परन्तु एसाव से बैर रखा"** (मलाकी 1:2–3)। परमेश्वर ने यह बात इन दोनों पुरुषों के जीवन के एक हज़ार वर्ष से भी अधिक समय बाद कही, **लेकिन वह आरंभ से ही एसाव के हृदय को जानता था।** जब उनके जीवन का इतिहास प्रकट हुआ, तब यह स्पष्ट हो गया कि परमेश्वर का चुनाव बिल्कुल सही था।

गर हम एसाव और उसकी तीनों पत्नियों के साथ चलें, तो हम उनके साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश से निकलकर कनान के सेईर देश में पहुँचेंगे। **वहीं एसाव के परिवार में अमालेक का जन्म हुआ, और यहीं से अमालेकियों की शुरुआत हुई।** सदियों के दौरान ये मरुभूमि की जातियाँ अनेक दिशाओं में फैल गईं, जिनमें से कुछ उत्तर अफ्रीका तक पहुँच गईं। **सभी अरब जातियाँ अब्राहम से उत्पन्न हुईं—हाजिरा,** जो मिस्री थी, के द्वारा, और कतूरा के द्वारा, जिससे अब्राहम ने सारा की मृत्यु के बाद विवाह किया था। इन जातियों ने आपस में विवाह किए, फिर भी वे इस्राएलियों के ही परिवार से संबंधित हैं।

यह मध्य पूर्व का पारिवारिक इतिहास है, जो किसी भी दूसरे सोत से कहीं ज़्यादा पीछे तक जाता है और आज की सुर्खियों में हम तक पहुँचता है।



परमेश्वर के अनन्त सत्य

उत्पत्ति 35-36 से हमारे लिए सीख

1 **पाप से शुद्धि और अंगीकार:**

याकूब ने अपने परिवार को, **"शुद्ध हो जाओ" और अपने पुराने वस्त्र उतार देने की जो आज्ञा दी, वह पाप का सामना करने और पुरानी आदतों को छोड़ने का प्रतीक है।** पुराने नियम में यह शारीरिक शुद्धि, **1 यूहन्ना 1:9** में पाई जाने वाली आत्मिक सच्चाई से तुलना की गई है। नए नियम के विश्वासी के लिए इसका अर्थ है कि यद्यपि **परमेश्वर क्षमा प्रदान करता है, फिर भी हमारे जीवन में पापों को स्वीकार करने और उनसे निपटने की जिम्मेदारी भी हमारी है।**



2 **पेय भेंट के रूप में उंडेला गया जीवन:**

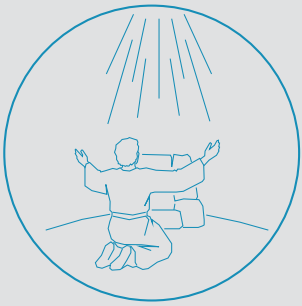
जब परमेश्वर ने याकूब से बात की, तब उसने एक पत्थर का स्मारक खड़ा किया और उस पर पेय बलि उंडेली। **पवित्रशास्त्र में पेय बलि का यह पहला उल्लेख है।** यह ऐसी भेंट थी जो उंडेले जाने पर भाप बनकर ऊपर उठ जाती थी।



- यह सत्य **फिलिप्पियों 2:17** से मेल खाता है, जहाँ **प्रेरित पौलुस ने इसी चित्र का उपयोग अपने सर्वोच्च आत्मिक लक्ष्य को व्यक्त करने के लिए किया।** उसकी इच्छा थी कि उसका अपना जीवन भी **परमेश्वर की सेवा में पेय बलि के समान पूरी तरह उंडेल दिया जाए।**

3 **अपने वादे के प्रति परमेश्वर की अटूट वफ़ादारी और आज्ञाकारी उपासना के ज़रिए विश्वासी की आत्मिक परिपक्वता का प्रमाण।**

- जब याकूब ने बेतेल लौटने की परमेश्वर की बुलाहट का पालन किया, तब उसने दिखाया कि उसने **अंततः परमेश्वर के लिए जीना और अपने जीवन में आत्मिक अगुवाई करना शुरू कर दिया था।** उसकी आज्ञाकारिता के उत्तर में परमेश्वर उसके सामने प्रकट हुए, आधिकारिक रूप से उसका नाम बदलकर इस्राएल रखा, और कहा, **"मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।"** स्रोत बताते हैं कि यही वह नाम है जिससे परमेश्वर ने पहली बार स्वयं को अब्राहम पर प्रकट किया था। उसी समय **परमेश्वर ने अपनी अनन्त वाचा को फिर से दृढ़ किया और याकूब से उसी देश का वादा किया,** जिसका वादा वह पहले अब्राहम और इसहाक से कर चुके थे।



- इस दिव्य प्रकट होने के प्रति याकूब की प्रतिक्रिया उसकी **आत्मिक परिपक्वता की यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।** उसने एक **वेदी बनाकर और उस स्थान का नाम एल-बेतेल रखा,** जिसका मतलब है "परमेश्वर के भवन का परमेश्वर", उचित प्रतिक्रिया दी। अपने दादा अब्राहम की तरह, **सर्वशक्तिमान परमेश्वर में याकूब का विश्वास उसके कार्यों से प्रकट हुआ।** जहाँ से उसकी यात्रा आरम्भ हुई थी, परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार वहीं लौटने का सही निर्णय लेकर और आराधना की वेदी बनाकर, **याकूब ने अपने जीवन में वास्तविक आत्मिक उन्नति का प्रमाण दिया।**

मनन के लिए प्रश्न

सवाल 1

जब परमेश्वर ने स्वयं को "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" के रूप में प्रकट किया और देश के विषय में अपनी प्रतिज्ञा को फिर से दृढ़ किया, तब याकूब ने परमेश्वर की महान विश्वासयोग्यता को पहचाना और उस स्थान का नाम एल-बेतेल, अर्थात् "परमेश्वर के भवन का परमेश्वर", रखा।

अपने आत्मिक जीवन की यात्रा को पीछे मुड़कर देखें। परमेश्वर ने आपके जीवन में अपने वादों को कैसे पूरा किया है? और कौन से खास पल या फैसले यह दिखाते हैं कि जब से आपने उनके साथ चलना शुरू किया है, तब से आप आत्मिक रूप से कितने आगे बढ़े हैं?

सवाल 2

याकूब की आत्मिक उन्नति उसके कार्यों से स्पष्ट दिखाई दी; उसने बेतेल लौटने के परमेश्वर के निर्देश का पालन किया और अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट करने के लिए आराधना की एक वेदी बनाई।

आप अपनी ज़िंदगी में कौन-सी व्यावहारिक "वेदी" बना सकते हैं, जैसे कि प्रार्थना के लिए एक निश्चित समय और जगह तय करना, अपने घर में आत्मिक अगुवाई करना, या सर्वशक्तिमान परमेश्वर में अपना भरोसा दिखाने के लिए आज्ञा मानने का कोई खास फ़ैसला करना?

सवाल 3

मूर्तियों को दूर करना: यद्यपि याकूब सच्चे परमेश्वर को जानता था, फिर भी उसने वर्षों तक अपने परिवार को "पराए देवताओं" को अपने पास रखने दिया। क्या आपके जीवन या घर में ऐसी कोई छिपी हुई मूर्तियाँ, समझौते, या पुरानी आदतें (पुराने वस्त्र) हैं, जिन्हें आपको आत्मिक अगुवाई में चलने के लिए अब अंततः छोड़ देना चाहिए?

सवाल 4

बेतेल लौटना: परमेश्वर ने याकूब से उस स्थान पर लौटने को कहा जहाँ उसने उसकी विपत्ति के समय उससे भेंट की थी और अपनी विश्वासयोग्यता सिद्ध की थी। आपका "बेतेल" कौन-सा है—आपके जीवन का वह विशेष समय या क्षण, जब कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर ने आपसे भेंट की थी? उस अनुभव को स्मरण करना आज आपको फिर से एक नई शुरुआत करने में कैसे सहायता कर सकता है?

सवाल 5

अपने जीवन को उंडेल देना: याकूब की पेय बलि उस जीवन का आदर्श प्रस्तुत करती है जो पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित है। यही सिद्धांत प्रेरित पौलुस के जीवन में भी दिखाई देता है। आप किन व्यावहारिक तरीकों से अपने जीवन, समय और संसाधनों को परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए "पेय बलि" के समान उंडेल रहे हैं?

सवाल 6

अपने हृदय में घमण्ड की जाँच करें: यद्यपि एसाव बाहरी रूप से आकर्षक व्यक्ति था, उसके वंशज एक ऐसे राष्ट्र बन गए जो घमण्ड से भर गया और ऐसे लोगों के समान जीने लगे जो मानते थे कि वे परमेश्वर के बिना भी जीवन जी सकते हैं। क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आप नम्रता के साथ परमेश्वर पर निर्भर रहने के बजाय "शारीरिक स्वभाव" के अनुसार चल रहे हैं या परमेश्वर से स्वतंत्र होकर जीने की घोषणा कर रहे हैं?

THRU the BIBLE

हमारे रिसोर्स का इस्तेमाल करें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और 200 से ज़्यादा भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें।

Visit ttb.bible

हमारी वेबसाइट पर 'स्क्रिप्चर एंगेजमेंट' बुक सीरीज़ के और भी वॉल्यूम वाली इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

Visit ttbsa.org